द्वि-दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका

9 एवं 10 मई, 2023

आयोजन स्थल : अम्बेडकर सभा कक्ष, संस्थान परिसर

संयुक्त तत्वावान

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर

एवं हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र., प्रयागराज

आयोजक

हिन्दी विभाग

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान

सुलतानपुर

E-mail : drrskni@gmail.com

Mob : 9415961500

knipss.ac.in

धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका

भारत एक धर्म प्रवण किन्तु सांस्कृतिक बहुलताओं से निर्मित देश है। वैश्वीकरण के इस दौर में धर्म और संस्कृति जैसे राष्ट्रनिर्मिति के कारकों में घोर विकृति परिलक्षित की गयी है। सत्तासाधकों ने धर्म के जिस स्वरूप को अपनाकर उसे जन भावनाओं के अनुरूप बताना चाहा है। वह अपने मूल अर्थों में जनता द्वारा स्वीकृत धर्म नहीं है। जनता तो धर्मशास्त्रों को अपने तरह से ग्रहीत करती रही है। जनता का विवेक ही जनधर्म का स्वरूप तय करता है। उसी तरह हजार साल की मानव सभ्यता में भारत के विचार-आचार, भाषा, तीज-त्यौहार, पहनावा आदि को तय करते हुए संस्कृति को जन्म दिया। सभ्यता का सम्बन्ध भौतिकता से है और संस्कृति का सम्बन्ध मानसिकता से है। आज हमने अपनी संस्कृति का परित्याग कर दिया है। कमाए गए मूल्यों का अस्तित्व संकट में है। सत्ता प्रायोजित संस्कृति कभी जन संस्कृति नहीं हो सकती, यद्यपि सत्ता उस पर जन संस्कृति का मुलम्मा इस तरह चढ़ाए रखती है कि पहचान मुश्किल होती है। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी विचलित जन धर्म और विकृत जन संस्कृति के कारक तत्वों की खोज करते हुए वास्तविक राष्ट्रधर्म और यथार्थ भारतीय संस्कृति का पहचानने का एक व्यापक वैचारिक उद्यम है।

राष्ट्रीय सेमिनार से सम्बन्धित उप-विषयों की सूची निम्नलिखित है। प्रतिभागी इन उप-विषयों के अतिरिक्त भी विषय से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण पक्षों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं -

1. मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन में लोक समाज की प्रभावी भूमिका।
2. भारतीय धर्म की संस्कृति के उन्नयन में लोक परम्पराओं की आवश्यकता।
3. भारतीय सांस्कृतिक विरासतों की अक्षुण्णता के सन्दर्भ में लोक कथाओं की सार्थकता।
4. मूल्य, परम्परा, विचार, दर्शन एवं नैतिकता की स्थापनाओं में लोक संगीत का अवदान।
5. मनुष्यता के बहुआयामी विकास में लोक भाषाओं की साहित्यिक भूमिका।

आवश्यक सूचनाएं

1. इच्छुक छात्र/शोधार्थी/बुद्धिजीवी सम्बन्धित विषय पर शोध सारांश तथा शोध आलेख दिनांक 7.5.2023 तक अनिवार्य रूप से निर्दिष्ट ईमेल पर भेजना सुनिश्चित करें।

   E-mail : drrskni@gmail.com Mob : 9415961500

2. शोध सारांश ;अधिकतम 250 शब्दोंद्ध तथा मौलिक शोध आलेख (अधिकतम 3000 शब्दों) MS Word Kurti Dev 10 में टाइप कर भेजें। पीडीएफ फाइल ही स्वीकार्य होगी। शोध आलेख के अन्त में विशेष टिप्पणी व सन्दर्भ ग्रंथों का समुचित उल्लेख होना चाहिए। शोध आलेख पर अपना मोबाइल नम्बर, व्हाट्सएप नम्बर, ईमेल आईडी एवं सम्पूर्ण पता (पिनकोड सहित) अवश्य लिखें।
3. चुने गए आलेखों का ISSN पुस्तक में रूप में यथासमय प्रकाशित किया जाएगा। इस सन्दर्भ में अन्तिम निर्णय विभाग का रहेगा।

जनपद सुलतानपुर

जनपद सुलतानपुर भगवान श्रीराम के पुत्र कुश जी द्वारा बसायी गयी नगरी है। जिसे पूर्व में कुशभवनपुर के नाम से जाना जाता था। हनुमान जी का प्रसिद्ध बिजेथुआ महावीरन स्थल जनपद मुख्यालय से लगभग 65 किमी दूरी पर स्थित है। जनपद मुख्यालय से 60 किमी की दूरी पर अयोध्या, 140 किमी की दूरी पर वाराणसी, 100 किमी की दूरी पर प्रयागराज एवं 140 किमी की दूरी पर राजधानी लखनऊ स्थित है। जनपद मुख्यालय पर ऐतिहासिक पारिजात वृक्ष भी है।

कमला नेहरु भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान - एक परिचय

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान का परिसर ऐतिहासिक नगर सुलतानपुर में गोमती की गोद में ऐसी जगह स्थित है जहां गोमती नदी अर्धचन्द्राकार होकर पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाती है। संस्थान, अपने संस्थापक श्री केदार नाथ सिंह के सपनों का, साकार और जीवन्त सरस्वती मंदिर है। श्री केदार नाथ सिंह जी ने इसे पूर्वांचल की गरीबी, अज्ञानता और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए कला एवं ज्ञान-विज्ञान के दीपक के रूप में प्रज्ज्वलित किया, जो संस्थान के रूप में जन-जन को आलोक दे रहा है।

संस्थान का नामकरण राष्ट्र को समर्पित एवं सेवानिष्ठ महिला श्रीमती कमला नेहरू, जिनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में आत्मत्याग एवं योगदान अप्रतिम है, की स्मृति में किया गया है। थोड़े दिनों बाद संस्थान अपनी संख्यात्मक एवं गुणात्मक प्रतिभा के विकास से शिक्षा-जगत का विशाल वट वृक्ष बन गया। ज्ञान, विज्ञान एवं कला की त्रिवेणीरूपी इस विशाल वट वृक्ष प्रदेश एवं देश भर में अपनी स्वतंत्र छवि और उपलब्धियों के लिये विख्यात है।

संस्थापक बाबू केदार नाथ सिंह जी द्वारा संस्थान में स्नातक स्तर पर चार संकायों कला, विज्ञान, शिक्षा और विधि की कक्षाओं का शुभारम्भ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर 1973 को किया गया। इसके उपरान्त मात्र छः वर्षों की अवधि में ही यह संस्थान वाणिज्य संकाय, परास्नातक विषयों की शिक्षा एवं अनुसंधान के प्रमुख केन्द्र के रूप में अग्रसर हुआ। विकास की यह गति यहां की गुणात्मक शिक्षा का उदाहरण भी कही जा सकती है। इस संस्थान में 12 हजार से भी अधिक छात्र-छात्रायें अध्ययनरत है। सम्प्रति एम.काम., एम.एड., एम.एस.-सी., एम.ए., बी.एस-सी गृह विज्ञान, बी.एस-सी. कृषि विज्ञान, बी.पी.एड, एमबीए, बीबीए एवं बी.टेक में अध्यापन वैशिष्ट्य के लिए संस्थान देश विदेश में अपनी अच्छी पहचान बना चुका है। इसके अतिरिक्त संस्थान में देश के भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु बी.एड. एवं एम.एड. की कक्षायें भी संचालित है। संस्थान में बी.टी.सी. की कक्षाएं भी संचालित हैं।

'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद' द्वारा दिनांक 3-4 मई 2019 को संस्थान का मूल्यांकन हुआ और मूल्यांकन के पश्चात 'ए ग्रेड' प्राप्त किया। संस्थान केन्द्रीय पुस्तकालय एवं समस्त व्याख्यान कक्षों को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से उन्नयन की दिशा में होने के साथ ही स्वायत्ता की ओर भी अग्रसर है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज - एक परिचय

हिन्दुस्तान की अधिसंख्य आबादी द्वारा हिन्दी व उर्दू भाषा बोली जाती थी। देश की आजादी में भी हिन्दी और उर्दू का अत्यधिक योगदान रहा है। हिन्दुस्तानी भाषा का तात्पर्य हिन्दी, उर्दू से है। इसी हिन्दुस्तानी के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए हिन्दुस्तानी एकेडेमी की स्थापना 22 जनवरी 1927 में हुई।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का उद्देश्य प्रारम्भ से लेकर सन् 1957 तक हिन्दी और उर्दू साहित्य की रक्षा करना रहा साथ ही भिन्न-भिन्न विषयों की उच्चकोटि की पुस्तकों पर पुरस्कार तथा दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद कर प्रकाशित करना रहा, किन्तु आजादी के बाद इसमें परिस्थितिवश युगान्तकारी परिवर्तन हुए और फलस्वरूप जनतांत्रिक शासन और जनता, दोनों ओर से भाषा और साहित्य के संबंध में नीति-परिवर्तन का विचार उठने लगा। शासन तथा एकेडेमी को ध्यान में रखते हुए 1956 में शासन ने एकेडेमी के संशोधित रूप को प्रस्तुत किया। एकेडेमी की परिषद ने सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के 21 की धारा 12 के अनुसार एकेडेमी के उद्देश्यों और लक्ष्यों को परिमार्जित किया। फलस्वरूप राज्य भाषा हिन्दी, उसके साहित्य तथा अन्य रूपों एवं शैलियों- जैसे- उर्दू, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आदि भाषाओं का परिरक्षण, संवर्धन और विकास जिनकी उन्नति से हिन्दी विकासवान हो सकती थी। मौलिक हिन्दी कृतियों, अन्य भारतीय भाषाओं तथा अनूदित कृतियों को प्रकाशित करने का प्रयास तथा साहित्यकारों के सम्मान एवं पुरस्कार देने की परम्परा के साथ अन्य कई उद्देश्यों को एकेडेमी से जोड़ा गया। साथ उत्कृष्ट कोटि के विद्वान एवं विशिष्ट साहित्यकारों द्वारा व्याख्यान मालाएँ कराने की नीति को एकेडेमी में समाहित किया गया। जिससे इन व्याख्यानों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जा सके।

राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन समिति

विनोद सिंह

संरक्षक

प्रबन्धक-केएनआईपीएसएस, सुलतानपुर

विधायक एवं पूर्व मंत्री

प्रो. आलोक कुमार सिंह

सह संरक्षक

प्राचार्य- कमला नेहरु भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर

देवेन्द्र प्रताप सिंह

सह संरक्षक

सचिव- हिन्दुस्तानी ऐकेडमी उ.प्र. प्रयागराज

प्रो. राधेश्याम सिंह

अध्यक्ष

प्रो. प्रतिमा सिंह

सचिव

डॉ. पवन कुमार रावत

सह सचिव

डॉ. प्रिया श्रीवास्तव

सदस्य

कु. दीपिका पाण्डेय

सदस्य

स्वागत समिति

प्रो. सुशील कुमार सिंह (उप प्राचार्य), प्रो. विजय प्रताप सिंह (कला संकाय प्रभारी)
डॉ. प्रमोद कुमार सिंह (समाज शास्त्र), प्रो. किरन सिंह, श्रीमती रंजना सिंह
श्रीमती वन्दना सिंह, डॉ. शक्ति सिंह

अनुशासन समिति

अनुराग पाण्डेय, डॉ. निकहत रफीक, डॉ. अनिल कुमार यादव

मुख्य वक्तागण

प्रो. डा. विजय बहादुर सिंह

सम्पादक - वागर्थ
पूर्व निदेशक - भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
पूर्व विभागाध्यक्ष- उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

प्रो. डा. राधावल्लभ त्रिपाठी

पूर्व कुलपति
भारतीय संस्कृत संस्थान
पूर्व विभागाध्यक्ष- हरिसिंह गौर केन्द्रीय विवि, सागर

डा. रविनन्दन सिंह

प्रसिद्ध साहित्य चिन्तक व आलोचक
प्रयागराज

कमल नयन पाण्डेय

सम्पादक - युग तेवर, लोक संस्कृति विशेषज्ञ
सुलतानपुर

आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप'

लोक साहित्य विशेषज्ञ
कादीपुर, सुलतानपुर

प्रो. डा. अनुराग मिश्र

हिन्दी विभाग
का.सु.साकेत महाविद्यालय, अयोध्या

इन्द्रमणि कुमार

हिन्दी विभाग
राणा प्रताप महाविद्यालय, सुलतानपुर

डॉ. अंजनी कुमार सिंह

युवा साहित्यकार व चिन्तक
मानापुर, प्रतापगढ़

अभिषेक कम्प्यूटर्स, सुल. '9918717272'